RESEARCH PAPER | Sanskrit | Volume : 5 | Issue : 6 | June 2015 | ISSN - 2249-555X



वैश्वीकरण और भारतीय समाज

KEYWORDS

Dr. Chitra Sharma

Lecturer, Arya Mahila Vidyapeth T.T.(CTE) College, Bhusawar, Bharatpur (Raj.)

वैश्वीकरण से तात्यर्प वास्तव में उस प्रकिया के प्रारम्भ होने से है जिसमें नियन्त्रण एवं प्रतिबन्धों को शिथिल करने एवं सम्पूर्ण विश्वकल्याण के लिये नीतियों तथा उदार सिद्धान्तों का निर्माण कर क्रियान्वयन पर बल दिया जाता है :–

एक अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण की बुनियादी बात है, प्रवाह कई तरह के हो सकते है :–

– विश्व के एक हिस्से के विचारों का दूसरे हिस्सों तक पहुँचाना।

– पूँजी का एक से ज्यादा जगहों पर सुगमतापूर्वक जाना।

– वस्तुओं का कई देशों में निर्बाध रूप से पहुँचाना।

– व्यापार तथा बेहतर आजीविका की तलाश में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लोगों की आवाजाही।

अतः वैश्वीकरण से 'विश्वव्यापी पारस्परिक जुडाव होता है। भारत में आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण की प्रकिया 1991 में प्रारम्भ हो गयी थी। वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारण है। इसके सिर्फ राजनीतिक, आर्थिक परिणाम ही नजर नही आते बल्कि उठते, बैठते, खाते–पीते, सोच विचार सभी पर इसका परिणाम नजर आता है।

अतः इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक एवं सामाजिक है। इसका उददेश्य मानव समाज में फैली असमानताओं को दूर करना, विभेदो को मिटाकर सम्पूर्ण विश्व को सुखी एवं समृद्ध बनाकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को जागृत करना है। हमारे इस वैश्वीकरण की भावना के पीछे ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत'' की जन कल्याण की भावना रही है। वैश्वीकरण की प्रकिया का मूलाधार मानव–मात्र का कल्याण, पिछड़े हुओं को आगे बढाना, भूखों को रोटी, नंगो को कपडे उपलब्ध कराना होना चाहिए। वैश्वीकरण के चलते अब विचारों के सामने राष्ट्र की सीमाओं की बाधा नहीं रही, उनका प्रवाह अबाध हो उठा है। इंटरनेट और कम्प्यूटर से जुडी सेवाए, टेलीग्राम, टेलीफोन और माइक्रोचिप के नवीनतम आविष्कारों ने विश्व के विभिन्न भागो के बीच संचार की कांति कर दिखायी है जिसका प्रभाव हमारे सोचने के तरीके पर भी पडेगा। जिससे विश्व के विभिन्न भागो के लोग अब यह समझ रहे है कि वे आपस में जुडे हुये है। हम देखते है कि विश्व के एक हिस्से में घटने वाली घटना का प्रभाव विश्व के दूसरे हिस्से में भी पडता है। जैसे सुनामी, बर्ड फ्लू आदि किसी एक राष्ट्र की हदों में सिमटे नही रहते बल्कि विश्वभर में महसूस किये जाते है।

संस्कृति कोई जड वस्तु नहीं होती है हर संस्कृति हर समय बाहरी प्रभावो को स्वीकार करती है। कुछ बाहरी प्रभावों से हमारी पसंद,नापसंद का दायरा बढता है तो कुछ बाहरी प्रभाव नकारात्मक होते है। सकारात्मक बाहरी प्रभाव होने से परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को छोडे बिना संस्कृति को परिष्कार होता है। हमारे रहने खाने पहने के दायरे बढ जाते है हम इडली के साथ पीजा एवं पजामी की जगह खादी के कुर्ते के साथ जीन्स पहन सकते है। जिससे सामाजिक समरूपता देखने को मिलती है जो वैश्वीकरण का एक मोटा उदाहरण है। संचार, आवागमन, पर्यटन, स्थानान्तरण आदि की प्रकियाएं वर्तमान दुनिया में इतनी तीव्र हो गई है कि तीव्र गति के साथ दुनिया की विभिन्न संस्कृतियां एक दूसरे के पास आ रही है। यही संस्कृति की समरूपता ले आता है। जिससे यह डर भी रहता है कि विश्व संस्कृति के नाम पर शेष विश्व पर पश्चिमी संस्कृति भी लादी जा रही हैं क्योकि राजनीतिक और आर्थिक रूप से प्रभुत्वशाली संस्कृति कम ताकतवर समाजों पर अपनी छाप छोडती है और परस्पर वैसा ही दिखता है जैसा ताकतवर संस्कृति इसे बनाना चाहती है। इससे पूरे विश्व की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर धीर–धीरे खत्म होती है। यह सम्पूर्ण मानवता के लिये खतरनाक है यह आज बहस का मुद्दा बन गया है।

भारत के विश्वव्यापीकरण के परिणामस्वरूप जो परिवर्तन आया है उसने कई नवीन आन्दोलनों को जन्म दिया है। भारत में वर्तमान समय में दलित आन्दोलन और इसी प्रकार जातीय आन्दोलन सामान्य हो गये है। बराबर गोष्ठियों और सम्मेलनों में दृढता के साथ मानव अधिकारों की चर्चा है। विभिन्न जातियों में सांस्कृतिक भिन्नताऐं बहुत अधिक है इसके कारण भी जाति भेदभाव तथा जातिवाद को बढावा मिलता है।

सरकार को चाहिये इन जातियों संगठनों पर प्रतिबंध लगा दे जिससे न तो ऐसे संगठन बनेगें तथा न ही जिला ,राज्य और अखिल भारतीय स्तर पर जातीय सम्मेलन होगे तो जातिवाद अपने आप समाप्त हो जायेगा। इसके साथ ही मंत्री लोग जाति के प्रतिनिधि के रूप में अधिक जातिगत कार्य करके जातिवाद को बढावा देते है जाति के आधार पर उम्मीदवारों को चुनाव में खडा किया जाता है। जाति के नाम पर वोट मॉगे जाते है। इसलिये सरकार को जातिगत राजनीति को बंद करने के लिये प्रयास करने चाहिये। जिससे जातिवाद समाप्त हो जो हमारे समाज के लिय राष्ट्र एवं राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के लिये भारी धातक है।

इस प्रकार संस्कृतिकरण की प्रकिया भी इन्ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक भेदभाव को कम करने का तथा समानता लाने की प्रक्रिया है। यहा तक कि आज के आधुनिक युग में एक ऐसी संस्कृति विकसित हो रही है जो कि विश्वव्यापी है इस संस्कृति में परिवार, मनोरंजन, साहित्य, कला और जीवन के कई अन्य तत्व शामिल है।

अतः वैश्वीकरण से सांस्कृतिक समरूपता आती है तथा विभिन्न राष्ट्रों के बीच सम्पर्क की सघनता ने पर संस्कृति ग्रहण की प्रकिया को बढाया है। पर संस्कृति ग्रहण में एक राष्ट्र के लोग अपनी संस्कृति से जुडाव रखते हुये दूसरे देश की संस्कृति को ग्रहण करने लगते है। इससे पश्चिम व भारतीय संस्कृति की समन्ययात्मक स्वरूप सामने आ रहा है। इसका प्रभाव हमारी जीवनशैली खान पान, रहन–सहन, पहनावा, भाषा शैली आदि में दिखाई देने लगा है। वैश्वीकरण से महानगरो के विकास तीव्र हुये। ये महानगर आधुनिक विकास के जीवन्त प्रतीक बन गये है। इसके साथ ही वैश्वीकरण से आर्थिक, राजनीतिक संस्कृति, सामाजिक और संस्थागत पक्ष एक दूसरे से अन्तरसंबंधित हुये है और देश के विकास में एक बहुआयामी भूमिका अदा करते है।